<u>बच्चे काम पर जा रहे हैं</u>

कविता का सार / प्रतिपाद्य

यह कविता आज के समय में बच्चों से बाल मजदूरी करवाए जाने की समस्या पर दुख प्रकट करती है। कवि हैरान है कि खेलने-कूदने-पढ़ने की उम्र में बच्चे गरीबी के कारण नौकरी करने के लिए विवश हैं। इस तरह लोगों को कम पैसे में मज़दूर मिल जाते है और माता-पिता अपना खर्चा चलाते हैं। समाज तथा परिवारवालों द्वारा बच्चों का शोषण किया जा रहा है। यह बहुत भयानक बात है। हमें चाहिए कि कुछ ऐसा करें, जिससे इनको पढ़ने की सुविधा प्राप्त हो सके। इनको सुंदर जीवन और भविष्य दिया जा सके। यदि समाज और हम ऐसा नहीं कर पाते हैं, तो यह बहुत ही दुखद बात है। हमें अभी से प्रयास करने चाहिए।

कविता का भाव

- कविता का भाव यह है कि हमें बाल-मज़दूरी के विरोध में खड़े होना चाहिए। यदि इसे नहीं रोका गया, तो बच्चों का भविष्य नष्ट हो जाएगा।

भाषा शैली की विशेषताएँ

- प्रवाहमयी भाषा
- उर्दू शब्दों से युक्त
- गेयता के गुण से पूर्ण
- सरल तथा सीधी भाषा
- अलंकार का सुंदर प्रयोग
- कथात्मक शैली के गुण से युक्त

कविता का उद्देश्य

- बाल-मज़दूरी पर सरकार, समाज तथा लोगों का ध्यान आकर्षित कर इसे समाप्त करने का प्रयास करना।

कविता से मिलने वाली शिक्षाएँ / संदेश / प्रेरणा

- यह पाठ हमें शिक्षा देता है कि हमें बाल-मज़दूरी को रोकने का प्रयास करना चाहिए।

ISC COACHING CENTRE